III

वातावरणीय अध्ययन के विकास पर निबंध लिखिए –

वातावरणीय अध्ययन का विकास

भूगोल मे वातावरणीय अध्ययन की सार्थक शुरुआत यद्यपि २० वीं शताब्दी मे हुई तथापि इसके बिखरे-बिखरे रूप ईसा पूर्व के ग्रन्थों मे भी मिलती है। अधिकांश विचारक अपनी विचारधारा का प्रतिपादन स्वतन्त्र रूप से करते थे। उसे इस ग्रहण करते है।

(1) आरम्भिक युग – वातावरणीय अध्ययन के सन्दर्भ मे इस युग के दो महान विचारक उल्लेखनीय है।

(1) हेरोडोटस (2) अरस्तू –

हेरोडोटस – ने मिस्र की तत्कालीन सभ्यता के लिए नील नदी के वतावरण को उत्तरदायी माना। उन्होंने अपने विभिन्न लेखो मे इस बात की भी चर्चा की किसी राज्य अथवा क्षेत्र के मानव वर्ग के लक्षणो को जानने और समझने के लिए वहाँ की घटनाओ तथा वतावरण के पारस्परिक सम्बन्धो का अध्ययन हो।

अरस्तू – यूनान के प्रसिद्ध विचारक थे उन्होने अपनी राजनीतिशास्त्र की पुस्तक मे शीत प्रधान वतावरण यूरोपीय निवासियो को बहादुर और दक्ष बताया और यह भी कहा कि यूरोप के लोग अपनी वीरता के कारण ही कभी परतन्त्र नही हुऐ

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(2) जर्मनी मे रिटर काल और उसके बाद

कार्ल रिटर ने - भूगोल की सुविधा मानव अध्ययन पर बल देते हुए बताया कि वतावरण का निर्माण ईश्वर ने मानव की कार्यों की सुविधा के लिए किया है। और यह रिटर के बाद रैटजेल ने मानव के विभिन्न क्रियाकलापो पर प्राकृतिक वतावरण के विभिन्न तत्वों (पर्वतीय भाग नदियाँ जलाशय जलवायु आदि) के व्यापक प्रभाव का उलेख किया रिचथोफेन ने भूगोल मे यांत्रिक जैविक और मानवीय महत्वपूर्ण बताया

संरक्षणवादी विचारधारा - अमेरिका मे रैटजेल के समकालीन जार्ज पी० मार्श ने 1874 मे अपनी एक पुस्तक The Earth as Modified by Human Action के द्वारा वतावरण के साथ मानव के अविवेकपूर्ण हस्तक्षेप पर गहरी चिन्ता प्रकट की और इस तथ्य को रेखांकित किया मनुष्य के जिवकोपार्जन के साधनो के नष्ट न करके प्राकृतिक तत्वो के साथ सहज समंजस्य स्थापित करना चाहिए। प्रसिद्ध रूसी विद्वान वाइकाफ को भी यही चिन्ता थी। इस प्रकार से फ्रांस मे रिटर के शिष्य रेक्लूज भी प्रभावित हुए उनका विचार था की मनुष्य अपने अवास निर्माण के लिए वृक्षो को काट डालता है और जंगली जानवरो की पालतु परन्तु जिससे प्राकृतिक वतावरण का संतुलन बिगड़ जाता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

बीसवी शताब्दी की वतावरण सम्बन्धी विचार धारा — बीसवी शताब्दी के प्रारम्भिक दो दशको मे प्राकृतिक वतावरण तथा मानव के बीच प्राप्त अन्तर्सम्बधो को लेकर दो मुख्य विचार धारा का सुत्रपात लगभग एक साथ हुआ।

(1) वातावरण निश्चयवाद — जिसकी बागडोर अमेरिका मे रैटजेल की शिष्या कुमारी सेम्पुल के हाथ मे थी तथा

(2) सम्भववाद — जिसके नेता फेब्रे और ब्लाशे

कु० सेम्पुल ने 1911 मे अपनी पुस्तक Influence of Geographic environment मे

पृथ्वी ने अपनी प्राकृतिक वतावरण के साथ स्पष्ट किया। ने केवल मनुष्य को जन्म दिया है। बल्कि उसका लालन पालन किया है। उसके विचारो को निश्चित दशाओ की ओर मोड़ा है। और इस तरह उसके अस्थि और कोशिका मे उसके मस्तिस्क और आत्मा भी समा गयी है

सन् 1920 के पश्चात अमेरिकी विद्वानो ने पारिस्थितिकी सम्बन्धो की व्याख्या प्रस्तुत की हालेन बारोज ने मानव पारिस्थितिकी के रुप मे मानव और वतावरण की सबसे सरल व्याख्या मानव द्वारा वतावरण की उपयोग विधी मे निहित है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

द्वितीय विश्वयुद्ध (1945 ई०) काल मे जर्मनी मे अनेक विद्वानो ने पारिस्थितिकी परारूप का उल्लेख किया । जिसे ब्रिटेन के वनस्पति पारिस्थितिकी तन्त्र का उल्लेख किया

आधुनिक या वर्तमान काल – वर्तमान समय मे फिलिप वैगनर पीटर हैगेट सर्लिव एवं सर्लिच सोनफील्ड सदृश्य विद्वानो ने वतावरणीय अध्ययन को सर्वथा नवीन दृष्टिकोण से व्याख्यातित्व और विश्लेषित किया

फिलिप वैगनर – वतावरण को किसी वस्तु के बारे मे विचार करने का तरीका मानते है।

पीटर हैगेट ने वतावरण को अवस्थाओ का सम्पुर्ण योग माना है।

सोनेन्फील्ड ने वतावरण को व्यवहारात्मक का वर्गीकरण मानव मास्तिक के सन्दर्भ है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, तोखा, बलिया

Date
Page

संभववाद की व्याख्या किजिए

सम्भववाद

पर्यावरणवाद या नियतिवाद के चलते भूगोलवेत्ताओ ने यह अनुभव किया कि मानव की क्षमता एवं महत्ता को नकारा जा रहा है। इसी प्रकार के विचारो की प्रादुर्भाव होने से मानव पर्यावरण सम्बन्धों को लेकर भूगोल मे जो विचारधारा विकसित हुई है।
(सम्भववाद) के नाम से जाना जाता है। तथा उसे प्राकृति के सहायता स्वीकार किया हैगेट ने लिखा है। सम्भववाद पर्यावरणवाद से भिन्न मनुष्य की स्वतंत्रता मे विश्वास रखता है।
फ्रांसीसी विद्वान फेब्वरे थे यद्यपि इसे वास्तविक स्वरुप फ्रांस के ही प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता ~~वइलड~~ वाइलड डी ला ब्लाश ने दिया तदुपरान्त जीन्स ब्रुन्स - बोमेन - कार्लसावर - आदि अनेक विद्वानो ने इस विचारधारा को पुष्टकिया फेब्वरे जो मूलत: इतिहासकार थे उन्होने अपनी पुस्तक Geographical Introduction to History मे मानव पर्यावरण सम्बन्धों के नवीन रूप मे प्रस्तुत किया फेब्वरे ने मानव को एक भौगोलिक तत्व या एजेन्ट स्वीकार किया। जिस प्रकार अन्य तत्व जैसे जलवायु वनस्पति मृदा आदि है उसी प्रकार मनुष्य भी है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

सम्भववादी विचारधारा के जनक फ्रांस के भूगोल वेत्ता बाइडल डी ला ब्लाश को माना जाता है जिन्होंने अपनी पुस्तक Principles of Human Geography मे केवल मानव पर्यावरण सम्बन्धों हेतु सम्भववाद का विचार धारा दिया अपितु उनके अनुसार प्राकृति मात्र एक मार्गदर्शक या सलाहकार के रूप है। भौगोलिक तत्वों मे पर्यावरण के तत्वों के सीमित अस्तित्व है। जैसे ही इनका मानव से समन्वय किया जाता है। वे उतने ही परिवर्तन शील है। जितनी की मानवता ब्लाश ने अपने शक्ति-ज्ञान कौशल वैद्धिकता को प्रयाप्त महत्व देते है।

बोमेन के अनुसार भौगोलिक अध्ययन मे सम्भव वाद की जड़ अत्याधिक गहराई तक है। इन्होंने मानव पर्यावरण सम्बन्धों को नवीन रूप मे प्रस्तुत किया

उनके अनुसार जैसे-जैसे ज्ञान और विज्ञान के विकास और विस्तार होता जाता है। प्राकृतिक पर्यावरण तथा संसाधनों के उपयोग मे न केवल वृद्धि हो जाती है।

कार्ल सावर ने भी मानव की क्षमता की प्रतिपादन करते हुए सम्भववादी विचारधारा के विकास मे योगदान दिया

ब्लाश के शिष्य जीन् ब्रुंश ने सम्भववाद की विचार-धारा को आगे बढ़ाया तथा अपनी पुस्तक Human Geography

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

मे इसकी विरुद्ध व्याख्या की परिवर्तन प्राकृति का नियम है। और संसार की प्रत्येक वस्तु चाहे वह भौतिक हो या सास्कृतिक परिवर्तन शील रहती है। यदि मनुष्य प्राकृतिक तत्वो का परिवर्तित पुर्ण रुप से नभी कर पाताहै तो वह उन्हे योग्य बना देता है।
जो भौतिक तत्वो की गहन जानकारी और उन तत्वो के कुशल पुर्वक अनुकूलन द्वारा प्राप्त होती है। उन्होने ~~प~~ पर्यावरण की सीमाओ को स्वीकारते हुऐ मानव क्षमता को महत्व दिया है।
उपर्युक्त विद्वानो ने अतिरिक्त डियाजिया ब्लैचार्ड ~~हेम~~ हेनटर किरचॉफ आदि ने भी मानव की सर्वोपरि स्वीकार करते हुऐ सम्भववाद का विचार धारा को पुष्ट किया संक्षेप मै सम्भववाद नियतिवाद के विपरित विकासित होने वाली विचार धारा थी। जिसमै मानव की पर्यावरण से सर्वोच्च वर्णित किया गया
स्वयं फेब्वरे ने स्वीकार किया है। मानव चाहे जिस रुप मे प्रयास कर ले वह प्राकृतिक परिवेश से स्वतन्त्र नही हो पाता। वर्तमान युग मे जबकि अत्याधिक प्रगति हो गई है और मानव प्रकृति पर विजय का दवा करता है। फिर भी आज विश्व का अनेक भाग मानव रहित है। वहाँ कार्य नही हो सकती आज सूखे और बाढ से हजारो ही नही लाखो की मृत्यु हो गई

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

संधृत विकास से आप क्या समझते है?

संधृत (सतत) विकास

संधृत विकास की मान्यता है कि उपयुक्त प्रविधि एवं सामाजिक व्यवस्था द्वारा पारिस्थितिकी तन्त्र से पर्याप्त मात्रा मे संसाधनो की प्राप्ति हो सकती है जो मानव समाज की वर्तमान एवं भावी जरूरतो की पूर्ति कर सकती है। लेकिन यह पर्यावरण संरक्षण से हटकर संसाधनो की दोहन पर अंकुश नही लगाकर उनकी आपेक्षाई पर बल देता है। जो संसाधनो की विदोहन प्रौद्योगिकी विकास तथा संस्थागत परिवर्तनो के द्वारा मानव समाज का वर्तमान एवं भावी अवश्यकताओ के मध्य सामंजस्य स्थापित करने की महत्व देता है।

पृथ्वी तथा इसके निवासियो का भविष्य धारी क्षमताओ से समबद्ध पर्यावरणीय अनुरक्षण तथा पोषण पर निर्भर करता है।

1990 के दशक मे यह माना जाने लगा कि पर्यावरणीय संसाधनो के अतिदोहन या अविवेकपूर्ण तरीको से उपयोग करने पर पर्यावरणीय ह्रास तथा अस्थिरता उत्पन्न हो रही है।

जो मानवीय हस्तक्षेप के न्यूनतम स्तर पर स्वीकार करता है। यह किसी तन्त्र की क्षमता तथा उसके सतत प्रवाह को अनुरक्षित रखने के लिए सम्बन्ध करता है इसके फलस्वरूप वह तन्त्र अपना स्वास्थ्य अस्तित्व रख पाता है। इसके विपरित अर्थशास्त्रियों का तर्क है। संसाधनो का दोहन तथा अवनयन से शोध एवं विकास को बढ़ावा मिलता है तथा संसाधनो का

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

नये विकल्पो के बारे मे खोज की और अग्रसर होते है। लेकिन हर सम्भावना की भी एक सीमा होती है। लेकिन संधृत विकास की सकल्पना का विकास दो दशक पुर्व ही हुआ संधृत विकास शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग विश्व आयोग संरक्षण रणनीति मे 1980 ई मे किया गया लेकिन यह विस्तार मे 1987 मे पर्यावरण WCED एव विकास पर विश्व आयोग द्वारा प्रचलित किया है। WCED के प्रतिवेदन Our Common Future जिसे ब्रुटलैण्ड प्रतिवेदन के नाम से भी जानते है। इसके अनुसार भावी पीढी को अपनी आवश्यकताओ को पूरा करने की क्षमता मे ह्रास किये बिना वर्तमान पीढी की अवश्यकताओ को पुरा करना ही संधृत विकास है। एकल परिभाषा संधृत या पोषणीय के लिए विभिन्न विषयो के विचारो को लेकर समग्र किया गया। जिसमे अर्थशास्त्र से सीमा विकास या विकास नही समाजशास्त्र से प्रविधी की तथा पर्यावरणीय अध्ययनो मे सविकास, संसाधन पर्यावरण कडी आदि प्रमुख है। भारत मे पोषणीय विकास जीवनधारणीय विकास टिकाऊ विकास दीर्घकालीन प्रयुक्त किया गया दीर्घकालीन विकास सदावहार विकास आदी को संधृत विकास के रुप मे प्रयोग करते है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

1987 मे यूक्रेन के चेरनोबिल परमाणु के बाद
Weed ने लन्दन मे एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया
जिसे ब्रटलैण्ड आयोग के नाम से भी
जाना जाता है। इसके प्रमुख गो हरलेम
ब्रटलैण्ड ने शीघ्र ही इसकी शब्दावली मे
परिवर्तन किया था तथा संधृत शब्द कोरस
साहित्य मे अपनाया गया जो विकास की
सीमा को प्रतिपादित करता है। ब्रटलैण्ड आयोग
ने विकास की सीमा को स्पष्ट करते
हुए बताया संगठन द्वारा पर्यावरणीय
संसाधनों के उपयोग तथा मानवीय
गतिविधियों के प्रभावों को सहन करने
लम्बे समय से यह मान्यता रही है
कि पृथ्वी तथा इसके निवासियों का
भविष्य प्रकृति प्रदत्त जीवन-पोषित
व्यवस्था को बचाने में हमारी क्षमताओ
में कमी आते ही इसी सन्दर्भ मे
संधृत विकास से सम्बन्धित निम्न
प्रसंग महत्वपूर्ण है—

1) सभी नवीकरणीय संसाधनो का पूर्ण उपयोग संधृत है।
2) पृथ्वी पर जीवन की विविधता संरक्षित है।
3) प्राकृतिक पर्यावरण तत्वों का ह्रास कम हो गया है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

नव-निश्चयवाद की भौगोलिक विचारधारा क्या है।

नव-निश्चयवाद

नियतिवाद और सम्भववाद एकांगी या अतिवादी स्वीकार कर उसके स्थान पर एक माध्यम मार्गी विचारधारा का विकास हुआ नव-निश्चयवाद "या" आधुनिक नियतिवाद का नाम दिया गया। ग्रिफिथ टेलर जो इस विचार के प्रारम्भिक प्रणेता थे उन्होंने इसे रुको एवं जाओ नियतिवाद तथा हेयम ने इसको क्रियात्मक सम्भववाद का नाम दिया इसे किसी भी नाम से पुकारा जाय इसका उद्देश्य पूर्व विकसित दोनो विचारधारा के मध्य समन्वय करना है। अर्थात वह एक सीमा तक ही पर्यावरण की अनेक दशाओ को अपने अनुकूल कर लेता है। या उसके अनुरूप स्वयं हो जाते हैं। वास्तव मे न तो प्राकृति का मानव पर पूरा नियंत्रण है। टेलर ने इसकी व्याख्या करते हुऐ वर्णित किया कि वास्तव मे न तो दोनो का एक दूसरे से क्रियात्मक सम्बध है। प्रगति हेतु मानव के लिए आवश्यक है कि वह प्राकृतिक से सहयोग प्राप्त करे मानव एक देश के विकास की गति को तेज कर सकता है। मंद कर सकता है। या रोक सकता है। किन्तु वह पर्यावरण के दिशा निर्देशों की अवहेलना नही कर सकते इन्होने इसकी तुलना एक

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

ट्रैफिक नियंत्रक से जो गति को रोका सकता है किन्तु वह पर्यावरण के दिशा निर्देशो की अवहेलना नही कर सकता है। उन्होंने इसकी तुलना एक ट्रैफिक नियन्त्रक से जो गति को रोका सकता है उसकी दिशा को बदला सकता । यह विचार विकास विशेषकर वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास का प्रतिफल है। मानव पर्यावरण के सम्बन्ध का विश्लेषण इसी मध्यम मार्ग द्वारा सम्भव है। आदि मानव जहाँ पूर्णतया प्रकृति पर निर्भर था इसी कारण इस विचारधारा को कुछ विद्वान सम्भावनावाद के नाम से सम्बोधित करते है। जिसकी व्याख्या करते हुये हेगेट ने लिखा है। अर्थात सम्भावनावाद नियति एवं सम्भववाद के मध्य की समन्वय स्थिति है। वातावरण एवं मानव दोनो को पर्याप्त महत्व देने तथा उन्हे एक दूसरे का पूरक मानने के विचार अनेक भूगोलवेत्ताओ ने प्रस्तुत किये जिनमे फ्यूपर ओ० एच० के० स्टेप एफ० एफ० मार्टिन बूलरिज तथा ईस्ट राक्सवी हर्टिंसन आदि प्रमुख है। वास्तव मे पहले जहाँ वातावरण 'नियन्त्रण' की चर्चा थी वहाँ बाद मे 'प्रभाव' को माना जाने लगा तत्पश्चात 'अनुकूलन' को स्वीकारा जाने लगा।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

जनसंख्या वृद्धि पर पारिस्थितिकीय नियंत्रण एवं पर्यावरण की पोषण क्षमता पर प्रकाश डालिए।

जनसंख्या वृद्धि पर पर्यावरण का प्रभाव
जनसंख्या की वृद्धि नियमित रूप से हो रही है यदि यह वृद्धि अनवरत रहती है। इससे पर्यावरण पर इतना अधिक दबाव है कि उसकी धारणा अथवा पोषण क्षमता ही समाप्त हो जाएगी इस वृद्धि को मानव को नियन्त्रित करना होगा अन्यथा पर्यावरण अथवा प्राकृतिक कारक स्वयं इसे नियंन्त्रित कर देंगे होने वाले के करण हो अथवा मानव के स्वयं इसे के कार्यों द्वारा जैसा कि विगत शताब्दियो मेभी मे भी अकाल बाढ महामारी युद्ध आदि जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान दर द्वारा एक समय ऐसा आयेगा जबकि इसका पोषण पर्यावरण द्वारा सम्भव नही होगा स्वतः ही इसकी संख्या को नियन्त्रित करती रहती रावर्ट माल्थस का था जो उन्होंने Principles of Population नामक पुस्तक मे 1798 मे दिया था। माल्थस का परिकल्पना के अनुसार जनसंख्या मे ज्यामितीय वृद्धि अर्थात 2-4-8-16 होती है।
जबकि खाद्य उपलब्धि के स्तर से अधिक हो जायेगी तो इसमे अस्तित्व के लिए संघर्ष होगा

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

फलस्वरूप युद्ध अधर्म या दुष्कृत्य एवं जवाकिखाद्य अध्यायों मे गणितीय वृद्धि अर्थात 1-2-3-4 के रूप मे होती है। जनसंख्या फलस्वरूप युद्ध अधर्म या दुष्कृत्य एवं भूख का बोलवाला होने से यह काम हो जायेगी बाद मे माल्थस ने 1817 मे परिवार नियोजन को भी इसका नियन्त्रक स्वीकार किया है। माल्थस के विचारों का सार यह है। पर्यावरण जनसंख्या का पोषक है पर्यावरण के विभिन्न घटको की समन्वय समाप्त हो जाए अकाल मृत्यु का क्रम प्रारम्भ होजाता है। चाहे वह महमारी से हो या अकाल से बाढ से हो अथवा सुखे से जमीन के धसकने से हो या समुद्री तुफान से ज्वालामुखी विष्फोट से हो अथवा भूकम्प से और जब संसाधनो की कमी होनी लगती है।

जनसंख्या नियंत्रण के अनेक उदाहरण विगत इतिहास मे मिल जायेगे जब प्राकृतिक कारणो जैसे- अकाल - भूकम्प भूमि धसकना समुद्री तुफान आदि से हजारो लाखो व्यक्तियो की मृत्यु हो गई थी भारत मे 1837- 1863- 1876 - 78 के क्रमशः अकालो मे क्रमशः 8 लाख 10 लाख और 50 लाख व्यक्तियो की जान गई। चीन 1877 - 79 के अकाल मे 90 लाख तथा 1928-29 मे 30 लाख व्यक्तियो की जान गई। सोवियत संघ मे 1932-34 मे अकालो मे मरने वालो की संख्या 40 लाख थी। इसी प्रकार भूकम्प से अनेक देशो मे अकाल मृत्यु का हो जाना या समुद्री तुफानो से हानी यदा कदा होती रहती है।

जून 1991 मे बंगलादेश मे आये सामुद्री तूफान मे लगभग 5 लाख व्यक्तियों का अकाल मृत्यु हो गई प्रथम विश्व युद्ध मे (1914-18) मे 12 लाख द्वितीय विश्व युद्ध मे (1939-45) मे 15 लाख स्पेनिश युद्ध मे (1963-39) मे 63 लाख भारत के साम्प्रदायिक दंगो मे (1946-48) 59 लाख अमेरिका मे गृह युद्ध (1861-65) मे 58 लाख रूसी क्रान्ति (1918-20) मे 57 लाख क्रिमियन युद्ध (1853-1856) मे 54 लाख व्यक्ति मारे गये इसी प्रकार विगत दशको मे वियतनाम युद्ध अरब इजराइल संघर्ष भारत पाकिस्तान भारत चीन ईरान-इराक युद्ध आदि मे लाखो मौत हुई। जब जनसंख्या इस सीमा के निकट पहुच जाती है। उसकी तीन स्थितियाँ है

प्रथम-उसमे निरन्तर वृद्धि होती है

द्वितिय-इस सीमा पर पहुचने के पुर्व ही वृद्धि की दर मे गिरावट आ जाती है।

तृतीय- जनसंख्या सीमा को पार कर जाती है। जिसका बाहरी साधनो का भरण पोषण किया जाता है।

पर्यावरण का दवाव

पर्यावरण के दवाव के कारण जनसंख्या समायोजक आवश्यक होता है। जैसे- कृषि क्षेत्र मे विस्तार उत्पादन क्षमता मे विकास आर्थिक प्रगति तकनीकी प्रगति वैज्ञानिक प्रगति आदि के फलस्वरूप सीमा को ऊचा किया जा सकता है। वह अवस्था टाली नही जा सकती प्रथम अभावतक परिवर्तनो जो नकारात्मक होते है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया